परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण राजलदेसर में

मंगलभावना समारोह

१३ फरवरी। ऐतिहासिक एवं संघ प्रभावक इक्कीस दिवसीय राजलदेसर प्रवास का अन्तिम दिन। मंगलभावना समारोह का आयोजन। स्थानीय महिला मंडल, कन्यामंडल एवं तेयुप ने सुमधुर गीत के द्वारा मंगलभावनाएं व्यक्त की। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री पन्नालालजी बैद, कार्याध्यक्ष श्री मंगतमलजी दूगड़, मंत्री श्री कुलदीप बैद, श्री हनुमानमलजी दूगड़, श्री चुन्नीलालजी घोषल, महिला मंडल की मंत्री श्रीमती केसरदेवी, श्री जितेन्द्र घोषल, श्री गणेशमलजी नाहर, स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री हुणतमलजी नाहर आदि ने पूज्यवर के अनुग्रह के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अहिंसा यात्रा की सफलता की मंगलकामना की।

आज के कार्यक्रम में नवदीक्षित साधु-साध्वियों की बड़ी दीक्षा का उपक्रम भी रहा। नवदीक्षित मुनि आर्जवकुमारजी एवं नवदीक्षित साध्वियों ने अपने सप्तदिवसीय अनुभवों को प्रस्तुति दी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में सबको आध्यात्मिक विकास की अभिप्रेरणा दी। आचार्यवर ने नवदीक्षित साधु-साध्वियों को छेदोपस्थापनीय चारित्र स्वीकार करते हुए साधु-चर्या में जागरूक रहने की प्रेरणा दी।

ऐतिहासिक मर्यादा महोत्सव का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा 'मर्यादा महोत्सव सानंद संपन्न हुआ। मर्यादा महोत्सव का यह प्रसाद गुरुदेवश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त है। उनके वचनों को पूरा कर हम प्रसन्न हैं। मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम सफल और संघ प्रभावक रहा। साधु-साध्वियों के सिंघाड़े उत्साह और उल्लास के साथ सहभागी बने। मंत्रीमुनि की उपलब्धि हुई। श्रावक समाज ने व्यवस्था में अपनी शक्ति का निष्ठापूर्वक नियोजन किया। कार्यकर्ताओं ने निष्ठापूर्ण श्रम किया। अब अहिंसा यात्रा के लिए कल का विहार निर्धारित है।

पूज्य गुरुदेवश्री महाप्रज्ञ ने सात वर्षीय अहिंसा यात्रा की। उनके द्वारा निर्धारित यात्रा जो अवशेष है, उसे संपन्न करने के लिए हम मेवाड़ की ओर विहार कर रहे हैं। अनुकंपा की चेतना का जागरण इस अहिंसा यात्रा का मुख्य लक्ष्य है। गुरुद्वय के आशीर्वाद और चतुर्विध धर्मसंघ की मंगलभावनाएं हमारे साथ हैं। हम 'तिन्नाणं तारयाणं' इस आगम सूक्त को चरितार्थ करते हुए स्वकल्याण और परकल्याण में अपनी शक्ति का प्रयोग करते रहें।' कार्यक्रम का कुशल संयोजन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

आचार्यप्रवर का मेवाड़ की ओर प्रस्थान

अहिंसा यात्रा का शंखनाद

१४ फरवरी २०११। राजलदेसर में सफल, ऐतिहासिक एवं प्रभावक मर्यादा महोत्सव की परिसंपन्नता के पश्चात पूर्व घोषणानुसार आज से परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा प्रारंभ की। मंगल प्रस्थान से पूर्व एक संक्षिप्त कार्यक्रम में शासन गौरव साध्वी राजीमतीजी आदि साध्वियों ने 'अहिंसा यात्रा जिन्दाबाद' गीत के द्वारा अहिंसा यात्रा के प्रति अपनी मंगल भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। मंत्री मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' ने यात्रा और संघ की श्रीवृद्धि की मंगलकामना की। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने धर्मसंघ की ओर से पूज्यप्रवर के प्रति अपनी मंगल आशंसा व्यक्त की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा 'मैं पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा के द्वितीय चरण की संपूर्ति के लिए उद्यत हो रहा हूं, इसका मुझे आत्मतोष है। गुरुद्वय के द्वारा प्रारंभ किए गए कार्यों को आगे बढ़ाना मेरा दायित्व है। प्रभु महावीर, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ को श्रद्धा के साथ स्मरण करता हुआ मैं उसी मंत्र को समुच्चारित कर रहा हूं जिसका पाठ सुजानगढ़ में सन् २००१ में अहिंसा यात्रा के प्रारंभ करते हुए पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के पावन सान्निध्य में मैंने किया था।'

'ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं सिद्धाणं सूरीणं उवज्झायाणं साहू य...' को तीन बार समुच्चारित करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि साध्वियों को अभिवादन किया तथा रत्नाधिक संतों के प्रतीक मंत्री मुनि सुमेरमलजी की चरण वंदना की। पूज्यप्रवर के मंगलपाठ के पश्चात 'अहिंसा यात्रा सफल हो' के घोष से वातावरण गुंजित हो उठा।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपनी धवल वाहिनी के साथ प्रातः लगभग १० बजकर २० मिनट पर नाहर भवन से प्रस्थान किया। इसी के साथ अहिंसा यात्रा प्रारंभ हो गई। आचार्यप्रवर ने मार्ग में सेवाकेन्द्र में वृद्ध साध्वियों को दर्शन दिए तथा उनकी मंगलभावना को स्वीकार किया।

अहिंसा यात्रा का प्रथम पड़ाव लूणासर में

आज ५.३ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर लूणासर गांव में पधारे। यहां आपका प्रवास शहीद भगवानसिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय में रहा। प्रातःकालीन कार्यक्रम में कन्यामंडल की कन्याओं ने गीत का संगान किया। श्री विजयसिंह सुराणा, श्री दिलीप दूगड़, श्री गोविन्दरामजी पुरोहित एवं स्थानीय विधायक श्री राजकुमार रिणवा ने पूज्यवर की अभिवंदना में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी ने राजलदेसर और उसके परिपार्श्व में चल रहे अणुव्रत के कार्यों की अवगति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा 'राजलदेसर में मर्यादा महोत्सव की सानंद संपन्नता के पश्चात हमने अहिंसा यात्रा प्रारंभ की और उसका पहला पड़ाव आज लूणासर में हुआ है। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा ५ दिसम्बर २००१ को प्रारंभ की गई अहिंसा यात्रा अनेक प्रान्तों में चली। वह बहुत प्रभावशाली और सफल रही। उस यात्रा के दौरान घोषित मेवाड़ और मारवाड़ के कार्यक्रम स्वास्थ्य आदि कारणों से स्थगित करने पड़े। आचार्यश्री के महाप्रयाण के बाद मैंने अवशिष्ट यात्रा को पूरा करने का निर्णय लिया और आज फिर उसे प्रारंभ कर रहा हूं। अनुकंपा की चेतना का विकास अहिंसा यात्रा का घोषित मुख्य लक्ष्य है।'

आचार्यप्रवर की अभिप्रेरणा से कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया।

पीपल के नीचे प्रवचन

१५ फरवरी। आज प्रातः लूणासर से प्रस्थान कर श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने जय मां करणी गोशाला होते हुए पड़िहारा की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती रतनादेसर में आचार्यप्रवर ने पीपल वृक्ष के नीचे गांव के लोगों को संबोधित किया। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया। श्री गणपतरामजी चौधरी के अनुरोध पर आचार्यप्रवर ने उनके घर का स्पर्श किया।

पड़िहारा में भव्य स्वागत

लगभग साढ़े दस किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर भव्य जुलूस के साथ पड़िहारा पधारे। यहां आपका प्रवास प्रज्ञा भवन में हुआ। ग्राम पंचायत के अध्यक्ष श्री जगजीतसिंहजी आदि गणमान्य लोगों ने आचार्यवर की अगवानी की। प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्रीमती समता बैंगानी और कन्यामंडल की कन्याओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सभा के अध्यक्ष श्री धर्मचन्दजी गोलछा एवं ग्राम पंचायत के सरपंच श्री जगजीतसिंह ने पूज्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा 'जीवन में सबसे बड़ा और ऊंचा स्थान है सत्य का। सत्य पर जो गहरी और अविचल आस्था रखता है, वह जीवन में आने वाली हर तरह की कठिनाइयों से पार पा लेता है। सत्य के लिए जो प्राणों का भी मोह नहीं करते, वे महापुरुष होते हैं।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने पड़िहारा के लिए एक महीने का प्रवास घोषित किया था, वे उस समय सीमित क्षेत्र में विचरण कर रहे थे। किन्तु मैं तो अभी असीम रहना चाहता हूं। फिर भी यथासंभव गुरु-वचनों को किसी न किसी रूप में पूरा करने का प्रयास रहेगा।'

प्रवचन के पश्चात साध्वी चन्दनबालाजी और लुधियाना के श्री कमल नौलखा ने दिवंगत साध्वी जतनकुमारीजी 'कनिष्ठा' के संदर्भ में अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी।

१६ फरवरी। आज पड़िहारा से लगभग ग्यारह किमी. का विहार कर श्रद्धेय आचार्यप्रवर रणधीसर पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रहा। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा 'मैं तपस्या से अधिक ऋजुता को महत्त्व देता हूं। जो ऋजु होता है, वह सबको प्रिय होता है। साधु माया से मुक्त होता है। माया से चित्त की मलिनता बढ़ती है। सरलता माया को तिरोहित करती है। आचार्यवर ने प्रसंगवश मुनि छोगालालजी का स्मरण किया, जो रणधीसर में दिवंगत हुए थे।

प्रवचन के पश्चात पूज्य आचार्यप्रवर ने नोखा में दिवंगत शासनश्री साध्वी मोहनाजी का संक्षिप्त परिचय दिया। चतुर्विध धर्मसंघ ने उनकी स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान किया।

कालूगणी की जन्मभूमि में

१७ फरवरी। आज प्रातः रणधीसर से साढ़े दस किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर अष्टमाचार्य पूज्य कालूगणी

की जन्मभूमि छापर पधारे। पूज्यप्रवर ने सर्वप्रथम सेवाकेन्द्र में वृद्ध संतों को दर्शन दिए। सेवाकेन्द्र के निवर्तमान व्यवस्थापक मुनि आलोककुमारजी एवं नवनियुक्त सेवाकेन्द्र व्यवस्थापक शासन गौरव मुनिश्री ताराचन्दजी एवं मुनि सुमतिकुमारजी ने सहवर्ती संतों के साथ पूज्यप्रवर का स्वागत किया।

सेवाकेन्द्र में वृद्ध संतों की सुखपृच्छा के पश्चात आचार्यप्रवर नवनिर्मित आचार्य महाप्रज्ञ शिशु वाटिका आदर्श विद्या निकेतन में पधारे। यह विद्यालय श्री हनुमानमलजी सिंघी द्वारा प्रदत्त भूमि पर स्व. श्री कन्हैयालालजी दुधोड़िया परिवार द्वारा निर्मित है। विद्यालय परिसर में आयोजित एक संक्षिप्त लोकार्पण कार्यक्रम में श्री इन्द्रचन्दजी दुधोड़िया ने पूज्यप्रवर से मंगलपाठ श्रवण कर विद्यालय का लोकार्पण किया। छात्र-छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत एवं विद्यालय की छात्राओं ने अणुव्रत गीत का संगान किया। स्थानीय विधायक श्री राजकुमार रिणवा, नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमती सुनीता पारीक, तेयुप के अ.भा. अध्यक्ष श्री गौतम डागा, श्री इन्द्रचन्दजी दुधोड़िया एवं मुनि आलोककुमारजी ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभागीय प्रचारक श्री योगेन्द्रकुमारजी ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु विद्यालय की संस्थापना करने वाले सिंघी एवं दुधोड़िया परिवार का आभार व्यक्त किया।

गत दो वर्षों से सेवाकेन्द्र में सेवारत मुनि आलोककुमारजी ने सेवा संपन्नता के अवसर पर अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त करते हुए सेवाकेन्द्र से संबद्ध फाइल मुनि सुमतिकुमारजी को सौंपी। इस वर्ष से सेवाकेन्द्र का दायित्व संभालने वाले मुनिश्री ताराचन्दजी के सहअग्रणी मुनि सुमतिकुमारजी ने पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में सेवा दायित्व के हस्तान्तरण एवं स्वीकृति को अपने परम सौभाग्य के रूप में स्वीकार करते हुए पूज्य आचार्यवर के मंगल आशीर्वाद की कामना की।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा 'छापर उस महान आचार्य की जन्मभूमि है, जिसने आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जैसे दो युगप्रधान आचार्यों को दीक्षित और शिक्षित किया। इसलिए यहां आने पर महामना आचार्य कालूगणी की पुण्यस्मृति स्वतः हो जाती है।'

अहिंसा यात्रा के उद्‌देश्य को स्पष्ट करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा 'हिंसा का मूल कारण है मोह कर्म की प्रबलता। काम और क्रोध की वृत्ति भी हिंसा के लिए प्रेरित करती है। धन और सत्ता का लोभ भी व्यक्ति को हिंसा की दिशा में ले जाता है। अभाव और गरीबी भी इसका एक कारण है। हिंसा से बचने के लिए इन वृत्तियों पर अंकुश बहुत जरूरी है। अहिंसा यात्रा का मुख्य उद्‌देश्य है अनुकंपा की चेतना का विकास। अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। अहिंसा जीवन में उतर जाए तो मनुष्य हर तरह की पापकारी प्रवृत्ति से बच सकता है।'

नवनिर्मित विद्यालय के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'बच्चों को संस्कारवान बनाने में विद्यालय की बड़ी भूमिका हो सकती है। विद्यालय विद्या का मंदिर होता है, जहां विद्यार्थी और शिक्षक दोनों मिलकर सरस्वती की आराधना करते हैं। विद्या संस्थानों में बालक-बालिकाएं ज्ञानसंपन्न बनें, सुसंस्कारी बनें, आत्मनिर्भर बनें। अगर इन तीन अपेक्षाओं की संपूर्ति होती है तो विद्यालयों की स्थापना सार्थक है।'

सेवाकेन्द्र के दायित्व हस्तान्तरण के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'मुनि आलोककुमारजी चाकरी के दायित्व से मुक्त हुए हैं और शासन गौरव मुनिश्री ताराचन्दजी के प्रतिनिधि मुनि सुमतिकुमारजी ने नया दायित्व लिया है। मुनि आलोकजी ने दो वर्ष तक अच्छी सेवा दी। छापर के लोगों ने इन्हें सराहा। अब आगे भी जहां जाएं, वहां अच्छा काम करें।

शासन गौरव मुनि ताराचन्दजी धर्मसंघ के साधनाशील संत हैं। ये निस्पृहता और निवृत्ति के पथ पर बढ़ रहे हैं। मुनि सुमतिकुमारजी भी अच्छे युवा संत हैं। अब ये सेवाकेन्द्र के वृद्ध संतों को और छापर की जनता को संभालेंगे।' कार्यक्रम का संयोजन श्री जयप्रकाश सोनी ने किया।

कार्यक्रम के पश्चात पूज्य आचार्यप्रवर प्रवास स्थल कालू कल्याण केन्द्र में पधार गए। आजका रात्रिकालीन प्रवास यहीं रहा।

अहिंसा यात्रा उद्‌गम स्थली पर

१८ फरवरी। छापर से विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर आज अहिंसा यात्रा की उद्‌गम स्थली सुजानगढ़ पधारे। नगर की जनता ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। यहां आपका प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ। मुनि सुखलालजी ने अपनी जन्मभूमि में आचार्यवर का अभिनंदन किया। मुनि रमेशकुमारजी ने भी पूज्यवर की अभिवंदना में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'इस दुनिया में युद्ध और शान्ति का क्रम चलता

रहता है। युद्ध समरांगण में बाद में लड़ा जाता है, सबसे पहले यह प्रकट होता है आदमी के दिमाग में। शत्रुता का भाव आते ही मस्तिष्क में भीषण झंझावात उठने लगता है और आदमी शस्त्र उठाकर मरने-मारने पर आमादा हो जाता है। साधना भी एक प्रकार का युद्ध है। इसमें शत्रु के रूप में होते हैं विजातीय तत्त्व काम, क्रोध, लोभ, मोह जैसे कषाय। साधना के लिए युद्ध से कहीं ज्यादा पराक्रम और पुरुषार्थ की अपेक्षा होती है, क्योंकि यहां केवल एक-दो शत्रुओं से नहीं, कई शत्रुओं से एक साथ लड़ना पड़ता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'हम अहिंसा यात्रा के साथ सुजानगढ़ आए हैं। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा यहीं से प्रारंभ की और समापन भी यहीं किया। समापन नहीं, पड़ाव पर पहुंच कर विश्राम कहें। वह यात्रा अब फिर से प्रारंभ हो गई है और पूर्व घोषित क्षेत्रों तक पहुंचने वाली है।

सुजानगढ़ के श्रावकों को संबोध प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा 'कोई भी क्षेत्र हो, वहां के श्रावकों में परस्पर सौहार्द रहना चाहिए। तेरापंथी सभाएं कलह-कदाग्रह से सर्वथा मुक्त रहें। केन्द्र की ओर से जो भी सुझाव और निर्देश मिलें, उन पर ध्यान दिया जाए और उनकी क्रियान्विति हो। सुजानगढ़ श्रद्धा का विशिष्ट क्षेत्र है। संघ के प्रति समर्पित और निष्ठावान यहां अनेक श्रावक हुए हैं, अब भी हैं। शुभकरणजी दसानी यहीं के थे। वे गुरुदेवश्री तुलसी के अंतरंग श्रावक थे। प्रसंगवश आचार्यश्री महाप्रज्ञ उनका कई बार उल्लेख करते। मुझे भी कई बार उनसे बात करने का अवसर मिला। सुजानगढ़ के लोग अपनी समृद्ध विरासत का ध्यान रखेंगे।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'मुनि रमेशकुमारजी ने इस वर्ष सुजानगढ़ सेवाकेन्द्र में चाकरी की। निष्ठा से सेवा की। इनमें शासनभक्ति की भावना है। ये अच्छा काम करते रहें।'

शासन सेवा में संलग्न सुजानगढ़ के संतों का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा 'मुनिश्री सुखलालजी बहुत काम करने वाले, अणुव्रत की चिन्ता करने वाले संत हैं। भिक्षु वाङ्मय आदि अनेक कार्यों में आपका पूरा सहयोग है। मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' चिन्तन एवं समीक्षा करने वाले संत हैं। मुनि विजयकुमारजी गीतकार और साहित्यकार संत हैं। मुनि योगेशकुमारजी दीक्षा लेकर हमारे पास आए। अभी हमारी सेवा में हैं। अच्छा काम करने वाले युवा संत हैं। अ.भा. तेयुप के सहप्रभारी हैं। मुनि रिद्धकरणजी ने आचार्यप्रवर की सेवा की, हमारी भी सेवा की। अभी हमारे साथ आए हैं। मुनि राकेशकुमारजी भी यहीं के हैं और अभी दिल्ली में प्रवास कर रहे हैं।'

प्रवचन के पश्चात श्रीमती शोभादेवी ने ज्ञानशाला की रिपोर्ट श्रीचरणों में प्रस्तुत की। श्री गौतम सेठिया ने 'अहिंसा उवाच' पुस्तक का अंग्रेजी और तमिल संस्करण उपहृत किया। आज चिकमगलूर प्रवासित गुड़ा रामसिंह का श्रावक समाज ससंघ श्रीचरणों में दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। क्षेत्र के प्रायः सभी श्रावक कार्यकर्ता संघ के साथ थे। कार्यकर्ताओं ने आमेट महोत्सव के बाद पाली जिले के सभी क्षेत्रों को स्पर्श करने का पूज्यवर से भाव भरा अनुरोध किया।

लाडनूं में ऐतिहासिक स्वागत

१६ फरवरी। आज प्रातः आचार्यवर ने सुजानगढ़ से लाडनूं के लिए विहार किया। वहां से प्रस्थान करते ही जनता का सैलाब उमड़ पड़ा। सुजानगढ़ और लाडनूं आज एकमेक हो रहे थे। नगर में पहुंचते ही लोगों की भीड़ भव्य और व्यवस्थित जुलूस का रूप ले चुकी थी। विमल विद्या विहार और जैविभा विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं की अनुशासित पंक्ति उन्हें अलग पहचान दे रही थी। नगर के मुख्य मार्ग से होता हुआ जुलूस मुख्य द्वार से प्रवेश कर सुधर्मा सभा में पहुंचा और स्वागत सभा के रूप में परिणत हो गया।

जैनविश्वभारती में पधारने से पूर्व पूज्य आचार्यप्रवर वृद्ध साध्वियों को दर्शन देने हेतु सेवाकेन्द्र में पधारे। सबकी कुशलपृच्छा की। आराध्य के दर्शन कर सभी साध्वियां कृतकृत्य हो गईं। बारम्बार गुरुदेवश्री की वंदना की, आगामी यात्रा के लिए मंगलकामना की।

सुधर्मा सभा में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में नगरपालिकाध्यक्ष श्री बच्छराजजी नाहटा, मान्य विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी, सेवाकेन्द्र की व्यवस्थापक साध्वी काव्यलताजी, ज्ञानशाला के बच्चों तथा स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री कमलसिंह खटेड़ ने गीत और वक्तव्य के द्वारा आचार्यप्रवर की अभिवंदना की। तेरापंथी सभा की ओर से प्रस्तुत अभिनंदन पत्र का वाचन जैविभा के उपमंत्री श्री विजयसिंह चोरड़िया ने किया। जैविभा के मंत्री श्री जितेन्द्र नाहटा एवं प्रधान ट्रस्टी श्री रणजीतजी कोठारी ने अभिनंदनपत्र पूज्यवर को उपहृत किया। एक अभिनंदन पत्र आदर्श विद्या मंदिर की ओर से आचार्यवर को उपहृत किया गया। मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आचार्यवर का अभिनंदन किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा 'गुरु के चरण जहां टिकते हैं, वह धरा धन्य

हो जाती है। वे आंखें भी तृप्त हो जाती हैं, जिन्हें गुरु के दर्शन प्राप्त होते हैं। आज जैनविश्वभारती का कण-कण पुलकित है, क्योंकि इसके अनुशास्ता और संरक्षक आचार्यप्रवर चतुर्विध धर्मसंघ के साथ इसके प्रांगण में पधारे हैं।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा 'लाडनूं की धरा ऐतिहासिक है। इसे तीर्थ भूमि के रूप में भी जाना जाता है। यह आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की कर्मभूमि है। आचार्य महाश्रमण यहां अनेक रूपों में पधारे हैं। आज यहां एक नये रूप में नया दस्तावेज लिखने के लिए पधारे हैं और मंत्री मुनि को साथ लेकर पधारे हैं। शब्दों की महत्ता और अर्थवत्ता को स्वीकार करते हुए भी आचार्यप्रवर शाब्दिक अभिनंदन से प्रभावित नहीं होते। आपका अमृत महोत्सव हमारे सामने है। आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष की आहट भी सुनाई देने लगी है। इस दृष्टि से कुछ ठोस कार्य करने के लिए सबको कटिबद्ध होना है। यह त्रिदिवसीय अल्प प्रवास तो पहली वर्षा के रूप में है। चिंतन के उर्वर बीज दो वर्ष बाद लहलहाती फसल के रूप में सामने आएं तो यह आपके श्रम की सार्थकता होगी।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'जीवन तो हर आदमी जीता है, किन्तु अलग-अलग तरीके से। कुछ लोग साधनाप्रधान जीवन जीते हैं तो कुछ लोग भोगप्रधान। कुछ लोग अनासक्त जीवन जीते हैं तो कुछ लोग आसक्ति में इतना डूब जाते हैं कि जीवन के उद्देश्य को ही विस्मृत कर देते हैं। पदार्थों की आसक्ति से मिलने वाला सुख क्षणिक होता है। आसक्ति साधना का एक बड़ा अवरोध है। यह आसक्ति आगे चलकर कामना का रूप ले लेती है। कामना की पूर्ति न होने पर क्रोध आता है। होना तो यह चाहिए कि समूह में रहकर भी व्यक्ति एकोऽहं की साधना करे। अपने आपमें रहना एक विशेष साधना है। साधक कषाय मंदता और निर्धारित आचार के प्रति जागरूक रहे।'

पंचनिष्ठामृत का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा 'आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, आचारनिष्ठा और मर्यादानिष्ठा का सभी में विकास हो।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'लाडनूं के साथ तेरापंथ का बहुत पुराना इतिहास जुड़ा हुआ है। गुरुदेवश्री तुलसी लाडनूं के रत्न थे। उन्होंने यहां मुझे और साध्वीप्रमुखाजी को महाश्रमण, महाश्रमणी और संघमहानिदेशिका पद पर नियुक्त किया। चातुर्मास के बाद मैंने तीर्थयात्रा की बात कही थी। हमारे सेवाकेन्द्र एक प्रकार के तीर्थ हैं। इस क्रम में प्रायः सेवाकेन्द्र के साधु-साध्वियों के दर्शन हो गए थे। आज लाडनूं सेवाकेन्द्र में भी वृद्ध साध्वियों के दर्शन हो गए। हमारी अहिंसा यात्रा के दो मुख्य निर्धारित क्षेत्र हैं मेवाड़ और मारवाड़। गुरुदेव के अवशेष कार्य को पूरा करने के लिए ही मैं इस यात्रा के लिए उद्यत हुआ हूं।'

लाडनूं तेरापंथ की राजधानी

लाडनूं और यहां स्थित जैनविश्वभारती के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए आचार्यवर ने कहा 'लाडनूं का महत्त्व एक-दो दृष्टि से नहीं, कई दृष्टियों से है। गुरुदेवश्री तुलसी की जन्मभूमि तो है ही, शिक्षा, शोध, संस्कार का बड़ा केन्द्र जैनविश्वभारती जैसा संस्थान, विश्वविद्यालय, पारमार्थिक शिक्षण संस्था और समणियों का यहां मुख्यालय है। अनेक बार प्रश्न होता है कि तेरापंथ की राजधानी कहां है? तो लोगों को क्षण भर के लिए सोचना पड़ता है। सबसे प्राचीन सेवाकेन्द्र लाडनूं है, धर्मसंघ के धर्मोपकरणों का भंडार यहां है। तेरापंथ की अनेक गतिविधियों का यह केन्द्र बन रहा है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए आज मैं लाडनूं को तेरापंथ की राजधानी स्थापित करता हूं। कह सकता हूं कि आज हम तेरापंथ की राजधानी में आए हैं। राजधानी के अनुरूप इसकी गरिमा प्रवर्द्धमान रहे। यह समणीवृन्द और मुमुक्षुवृन्द के निर्माण का स्थल है। यहां के विद्यालय और विश्वविद्यालय में कितने ही विद्यार्थी विद्यार्जन कर रहे हैं। सबमें ज्ञान के साथ-साथ सदाचार और अनुकंपा की चेतना का विकास हो, यही काम्य है।'

कार्यक्रम का संयोजन श्री संजय खटेड़ ने किया।

शासनश्री साध्वी मोहनाजी (राजगढ़) का स्वर्गवास

१३ फरवरी को नोखा में स्थिरवासिनी शासनश्री साध्वी मोहनाजी का अनशनपूर्वक स्वर्गवास हो गया। उनके संदर्भ में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा 'साध्वी मोहनाजी धर्मसंघ की सर्वज्येष्ठ साध्वी थीं। वे राजगढ़ के शासनभक्त नाहटा परिवार से संबद्ध थीं। उन्होंने दस वर्ष की लघुवय में पूज्य कालूगणी के मुखकमल से दीक्षा स्वीकार की। साध्वी रतनकंवरजी, साध्वी मालूजी, साध्वी सिरेकंवरजी (सरदारशहर) की संसारपक्षीया बहिन, साध्वी गौरांजी की संसारपक्षीया भुआ तथा साध्वी हरकंवरजी, साध्वी लिछमाजी की संसारपक्षीया मौसी थीं। वे सोलह वर्ष की अवस्था में अग्रगण्य बनीं। अनेक सुदूर प्रान्तों की यात्राएं कीं। लाहौर, भूटान, सिक्किम आदि की यात्रा करने

वाली प्रथम साध्वी होने का अवसर मिला। उनका साहस और मनोबल विशिष्ट था। उनकी आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा और व्यवहार कुशलता प्रशस्य थी। उन्हें चार आचार्यों (आचार्य कालूगणी, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण) का शासनकाल देखने का सौभाग्य मिला। गुरुदेवश्री तुलसी से उन्हें 'शासनश्री' संबोधन प्राप्त था। वृद्धावस्था और अस्वस्थता के कारण तेरह वर्ष से वे नोखा में प्रवास कर रही थीं। वहां उनका प्रवास बहुत प्रभावक रहा। उनकी यह प्रबल भावना थी कि एक बार आचार्यवर के दर्शन हो जाएं। हमने २० दिसम्बर को उन्हें दर्शन दिए। दो दिन वहां रहे और उपासना करवाई उनकी मनोकामना पूरी हो गई। हमने देखा वे मूर्ति-सी प्रतीत हो रही थीं। संवाद मिला १३ फरवरी को उन्होंने अनशन स्वीकार कर लिया है। उसी दिन समाधिमरण का वरण कर उन्होंने अपने जीवन को कृतार्थ कर लिया। उनके स्वर्गवास से कालू युग की एक प्रभावक साध्वी की कमी हो गई। साध्वी कनकश्रीजी (राजगढ़) आदि सहवर्ती साध्वियों ने जिस निष्ठा से उनकी सेवा की, वह तेरापंथ की प्रशस्त परंपरा का एक निदर्शन है। नोखा के श्रावक समाज एवं राजगढ़ के नाहटा परिवार ने भी अपने दायित्व का जागरूकता से निर्वाह किया।

साध्वी जतनकुमारीजी 'कनिष्ठा' का स्वर्गवास

१२ फरवरी को लुधियाना में साध्वी जतनकुमारीजी 'कनिष्ठा' (सरदारशहर) का अनशनपूर्वक स्वर्गवास हो गया। उनके संदर्भ में उद्‌गार व्यक्त करते हुए आचार्यवर ने कहा 'साध्वी जतनकुमारीजी सरदारशहर के श्रद्धाशील दूगड़ परिवार से संबद्ध थीं। उन्हें धर्म के संस्कार विरासत में प्राप्त थे। उनके पिता महालचन्दजी सात उपासक प्रतिमा की साधना करने वाले तथा प्रथम अणुव्रती थे। साध्वी जतनकुमारीजी ने पन्द्रह वर्ष की लघुवय में गुरुदेवश्री तुलसी से जयपुर में दीक्षा स्वीकार की। अट्‌ठाईस वर्ष तक ऋजुमना साध्वी वदनाजी की सेवा का दुर्लभ अवसर मिला। वे प्रबुद्ध, अध्ययनशील और शोध कार्य में दक्ष साध्वी थीं। उन्होंने हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, पाली, गुजराती और कन्नड़ भाषाओं का अध्ययन किया। कलाकुशल, आचारनिष्ठ और सेवाभावी साध्वी थीं। मातुश्री वदनाजी के स्वर्गवास के पश्चात गुरुदेव तुलसी ने उन्हें अग्रगण्य बनाया। अग्रगण्य के रूप में अनेक सुदूरवर्ती प्रान्तों की यात्राएं की, धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना की। वि.सं. २०१३ में उन्होंने आठ मास में सात प्रान्त और नेपाल देश का स्पर्श किया। इन वर्षों में अस्वस्थता के कारण लुधियाना में प्रवास कर रही थीं। ३ फरवरी को उनका आहार लेना बंद हो गया। तपस्या के छठे दिन उन्होंने तिविहार अनशन तथा १२ फरवरी को चौविहार अनशन स्वीकार किया। उसी दिन ग्यारह दिन के संलेखना-अनशन में जागरूकतापूर्वक समाधिमरण का वरण कर अपने जीवन को सार्थक बना लिया। उनके अनशन से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। धर्मसंघ में एक अच्छी साध्वी का स्थान रिक्त हो गया। साध्वी अमितप्रभाजी आदि साध्वियों ने जिस मनोयोग से उनकी सेवा की, वह हृदय को स्पर्श करने वाली है। लुधियाना के श्रावक समाज ने, विशेषतः महेन्द्रपालजी आदि श्रावकों ने तथा परिवारजनों ने अपने दायित्व का जागरूकता से निर्वाह किया।